

मृत शरीरों के संरक्षण, प्रदर्शन और अध्ययन की अनोखी विधि



15-16 वां सप्ताह



17 वां सप्ताह



24 वां सप्ताह



28 वें सप्ताह की समाप्ति पर



33 वां सप्ताह

प्लास्टीनेशन

मानव की प्रवृत्ति बहुत ही जिज्ञासु है। वह सब कुछ जान लेना चाहता है। वह प्रकृति में घटित होने वाली प्रत्येक घटना के रहस्योद्घाटन में लगा रहता है। ब्रह्माण्ड के रहस्यों को जानने व उजागर करने की लालसा उसके अंदर हमेशा से मौजूद रही है और यह लालक समय के साथ बढ़ती ही गई है। वह जितना अपने चारों तरफ मौजूद वातावरण, प्रकृति और जीवों के बारे में जानने को उत्सुक रहा है उतना ही अपने बारे में भी जानने को तत्पर रहा है। अपने जन्म से लेकर मृत्यु तक की यात्रा, रहन-सहन, आवास, व्यवहार, अनुकूलन आदि का तो वह मानव-इतिहास, मानव-विज्ञान और मानव-विकास के अन्तर्गत अध्ययन करता ही है साथ ही अपनी शारीरिक बनावट, आंतरिक अंगों तथा विभिन्न शारीरिक तन्त्रों आदि के बारे में वह चिकित्सा विज्ञान की कई शाखाओं के अन्तर्गत अध्ययन करता है। अंगों की बनावट, उनकी कार्य-प्रणाली, उनका अन्य अंगों से गठन, सामन्जस्य, अनुपात, स्थिति आदि के बारे में जानने के लिए उसने शरीर रचना विश्लेषण नामक चिकित्सा विज्ञान की शाखा विकसित की है। इस शाखा के अन्तर्गत शरीर के समस्त आन्तरिक अंगों का विच्छेदन विधि से अध्ययन किया जाता है।

■ संजय कुमार एवं विवेकानन्द सिंह ■

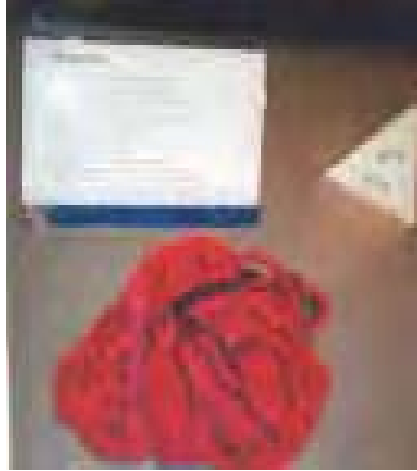


पारंपरिक तौर पर शारीरिक नमूनों व शारीरिक असामान्यताओं का अध्ययन करने के लिए उन्हें फार्मेलिहाइड नामक विलयन में रखा जाता है। इस विधि से संरक्षित नमूने नभीयुक्त तथा दुर्गन्धमय होते हैं।

लेकिन...! शरीर के आंतरिक अंगों के अध्ययन-अध्यापन के लिए तथा आमजन के लिए भी जानकारी उपलब्ध कराने के लिए मृत मानव-शरीरों की आवश्यकता पड़ती है। चूँकि हर धर्म में व्यक्ति की मृत्यु के पश्चात् उसके अन्तिम संस्कार की मान्यता हजारों वर्षों से चली आ रही है अतः अध्ययन के लिए मानव-शरीर का मिलना अत्यन्त दुष्कर है। चिकित्सा के क्षेत्र में नए प्रशिक्षु साल-दर-साल आते रहते हैं। उनके द्वारा अध्ययन किए जाने हेतु मृत मानव-शरीरों की अनुपलब्धता एक चुनौती बनकर हमेशा ही खड़ी रही है।

पारंपरिक ढंग से संरक्षित किए गए मानव के अंग व शरीर, जो कि सामान्यतः फार्मेलिन नामक रसायन के विलयन में होते हैं, अपना मूल रंग, प्रकृति और संरचना खो चुके होते हैं। साथ ही ये दुर्गन्धयुक्त भी होते हैं। हम इसका अनुमान भी नहीं लगा सकते हैं कि मानव-शरीर की आन्तरिक संरचना के विस्तृत अध्ययन के लिए चिकित्सा क्षेत्र के प्रशिक्षुओं को कितनी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है।

प्राचीन काल से ही मानव अपने शरीर के आन्तरिक अंगों के बारे में भी जिज्ञासु रहा है। आंतरिक अंगों का अधिकतम ज्ञान वह शरीर के विच्छेदन से प्राप्त करता रहा है। संरक्षण प्रक्रियाओं की शुरुआत मित्र के फराओ के समय से ही हो चुकी थी जिनके जरिए मृत मानव-शरीरों को संरक्षित किया जाता था। उस समय नमूनों को संरक्षित करने की कला को शुष्कन कहते थे। पूर्णतः संरक्षित मृत मानव के शरीर को ममी कहा जाता था। ममी को तैयार करने में चीड़ के टार से प्राप्त एक रसायन गुआईकॉल का प्रयोग भी किया जाता था लेकिन ममी तैयार करने में मांसल भाग सूख



काया संसार (Body Worlds) प्रदर्शनी में रखे गए मानव-भ्रूण विकास की कई अवस्थाओं के प्लास्टीनेट



मानव के गर्भनाल (Placenta) का प्लास्टीनेट

जाने के कारण सिर्फ ढाँचा सा बचा रह जाता था। प्रारंभिक दौर में मृत-शरीरों को मोम में भी संरक्षित किया जाता था लेकिन मोम में आंतरिक संरचनाएं खराब हो जाती थीं, साथ ही नमूने भंगुर हो जाते थे। मोम में संरक्षित नमूनों को एक ही स्थान पर रखकर तो दिखाया जा सकता था लेकिन उन्हें कहीं और नहीं ले जाया जा सकता था। बाद में कुछ प्रयोगधर्मियों ने एक तरह की वार्निश, अल्कोहल या स्पिरिटयुक्त अल्कोहल का प्रयोग संरक्षण के लिए किया। इसके पश्चात् अंतःसंरक्षण विलयनों जैसे कि फार्मेलिहाइड की खोज हुई जो संपूर्ण शरीर को संरक्षित कर सकता था। बाद में फिनाल का प्रयोग भी किया जाने लगा।

इतना ही नहीं, द्रव नाइट्रोजन में जन्तु-शरीर, पौधों व जन्तुओं के भ्रूण आदि का संरक्षण भी अत्याधुनिक प्रक्रिया के रूप में विकसित हुआ लेकिन यह प्रक्रिया जैव-विविधता संरक्षण में ही ज्यादा उपयोगी कही जाएगी क्योंकि यह अत्यंत महंगी और अव्यवहारिक है। मानव प्रदर्शों के लिए यह सर्वथा महंगी और अनुपयुक्त है। इस क्षेत्र में इतना विकास होने में कई सदियों बीत चुकी थीं। इन्हीं चुनौतियों को जर्मनी के

महान चिकित्सक, वैज्ञानिक व शरीर रचना विश्लेषक (anatomist) डॉ गुंटेर वॉन हेगेन ने हल करने का बीड़ा उठाया और अपनी लगन व तत्परता के बल पर मृत शरीरों के संरक्षण, प्रदर्शन व अध्ययन की एकदम नई और अनोखी प्रक्रिया ईजाद की जिसका नाम है - प्लास्टीनेशन। प्लास्टीनेशन की प्रक्रिया को सन् 1977 में खोजा गया जिसके अन्तर्गत शारीरिक द्रव (जल) व वसा को एक पॉलीमर से स्थानान्तरित कर दिया जाता है। जर्मन इनसाइक्लोपीडिया के 19वें संस्करण के अनुसार प्लास्टीनेशन (plastination) शब्द की उत्पत्ति प्लासेइन (plassein) से हुई है जिसका अर्थ है आकार या ढाँचा प्रदान करना। इस तरीके के खोजकर्ता अर्थात् डॉ गुंटेर वॉन हेगेन ने ही इस प्रक्रिया को प्लास्टीनेशन नाम भी दिया। प्लास्टीनेशन प्रक्रिया के जरिए तैयार किए गए नमूनों को प्लास्टीनेट कहा जाता है।

जैसा कि पहले भी उल्लेख किया जा चुका है कि डॉ गुंटेर वॉन हेगेन, जो कि एक चिकित्सक, वैज्ञानिक, शरीर रचना विश्लेषक और प्लास्टीनेशन के खोजकर्ता हैं, ने इस प्रक्रिया के लिए कई पेटेंट प्राप्त किये हैं। उन्होंने शरीर के द्रव को पॉलीमर से स्थानान्तरित करने की कल्पना को साकार किया। बाद में विभिन्न अंगों के आधार पर कई पॉलीमर और रेजिनों का प्रयोग करना शुरू किया। उन्होंने लिखा है कि कोई भी रहस्य या जानकारी किसी एक व्यक्ति तक सीमित नहीं होना चाहिए बल्कि उसका लाभ सभी तक पहुँचनी चाहिए। वे आगे लिखते हैं कि कोई भी चीज हमारे उतने नजदीक नहीं है जितना कि हमारा शरीर लेकिन कोई भी नजदीकी चीज ऐसी नहीं है जिसके बारे में हम इतना कम जानते हैं जितना कि अपने शरीर के बारे में।

प्लास्टीनेशन की प्रक्रिया

प्लास्टीनेशन जैसे तो बहुत ही सरल सी, कुछ चरणों में पूर्ण होने वाली प्रक्रिया है लेकिन यह बहुत ही तकनीकी, श्रमसाध्य, धैर्य और विशेषज्ञता का कार्य है। प्लास्टीनेशन की प्रक्रिया जितनी साधारण है इसे संपादित करना उतना ही दुरूह है। एक प्लास्टीनेट को तैयार करने में कई चरणों को क्रमागत तरीके से पूरा करना होता है जो कि अग्रांकित हैं।

• अपघटन का रोधन एवं विच्छेदन

प्लास्टीनेशन के प्राथमिक चरण में मृत शरीर के अपघटन को रोकने का जतन किया जाता है। ज्ञातव्य है कि जीवों की मृत्यु के बाद से ही मृत शरीर के अपघटन की प्रक्रिया शुरू हो जाती है। अपघटन में जीवाणु एवं कवकों की भूमिका सर्वोपरि होती है। अपघटन की शुरुआत आहारनाल तथा फेफड़ों के अलावा बाह्य त्वचा पर तेजी से शुरू हो जाती है। अपघटन को रोकने के लिए फार्मेलिन विलयन को मृत शरीर के अन्दर प्रविष्ट कराया जाता है। फार्मेलिन विलयन जीवाणुओं और कवकों के समूह को नष्ट कर



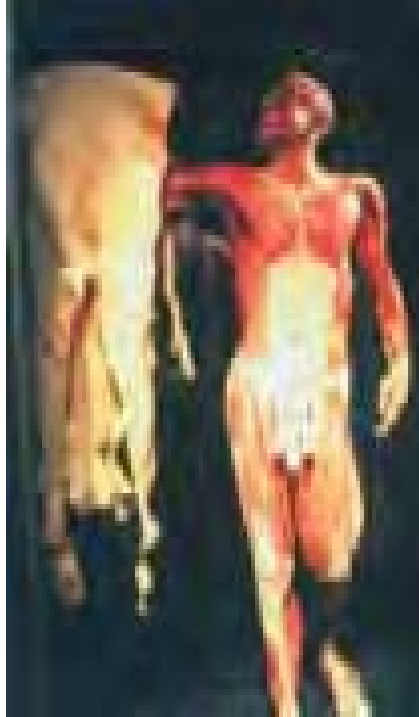
मादा मानव शरीर का सात महीने के गर्भ के साथ के प्लास्टीनेट का ऊर्ध्वधर कतरा



मानव गर्भ और गर्भस्थ शिशु का प्लास्टीनेट



कार्टिलेज-लिगामेन्ट और अस्थियों को प्रदर्शित करता हुआ एक उत्तम प्लास्टीनेट



काया-प्रदर्शों को अब तक लगभग तीन करोड़ लोग देख चुके हैं। पूर्ण काया, स्तरित चमड़ियां, मांसपेशियों के प्रदर्श, भ्रूणों का विकास, आंतरिक अंगों, दुर्ब्यसनों का अंगों पर दुष्प्रभाव आदि के जीवन्त प्रदर्शों की लगभग सभी आगन्तुकों ने सराहना की है।

देता है जिससे शारीरिक ऊतकों का विघटन रुक जाता है। इसके पश्चात् विच्छेदन-सामग्रियों की मदद से त्वचा और सतही वसा को हटाकर वांछित आन्तरांगों को प्रदर्शन हेतु खोला जाता है।

• शारीरिक जल व वसा का विस्थापन

शरीर में लगभग सत्तर फीसदी जल पाया जाता है। इस शारीरिक जल व वसा को हटाने के लिए ऐसे विलयन का प्रयोग किया जाता है जो शरीर की जल व वसा को खुद में घोल सके तथा उनकी जगह ले सके। एसीटोन नामक रसायन इस कार्य के लिए सर्वथा उपयुक्त होता है। उपरोक्त चरण के लिए संपूर्ण शरीर या अंग को एसीटोन से भरे हुए पात्र में लंबे समय तक डुबाया जाता है। इस प्रक्रिया को एसीटोन-स्नान कहते हैं। शरीर से जल व वसा को पूर्णतः हटाने तथा एसीटोन से शरीर को संतृप्त करने के लिए पात्र के एसीटोन को कई बार बदलना पड़ता है।

• निर्वात् द्वारा संतृप्तन

एसीटोन-स्नान के बाद मृत शरीर की प्रत्येक कोशिका में जल का स्थान एसीटोन ले चुका होता है तथा शारीरिक वसा एसीटोन में घुलकर निकल चुकी होती है। इसके बाद उस पदार्थ की जरूरत होती है जो शरीर में एसीटोन की जगह ले सके। इसके लिए पॉलीमर पदार्थों को उपयुक्त पाया गया है। निर्वात् द्वारा पॉलीमर से शरीर का संतृप्तन प्लास्टीनेशन प्रक्रिया

की केन्द्रीय प्रक्रिया है। पॉलीमर को मृत शरीर की प्रत्येक कोशिका में एसीटोन की जगह पर भेजने के लिए निर्वात् का सहारा लेना पड़ता है।

हम सब जानते हैं कि निर्वात् में कोई भी तरल पदार्थ कम ताप पर ही उबलने लगता है। निर्वात् उत्पन्न करने के लिए मृत शरीर सहित पॉलीमर को एक बड़े पात्र में बन्द करके पात्र में निर्वात् मशीन की सहायता से निर्वात् उत्पन्न किया जाता है। निर्वात् को उस हद तक बढ़ाते हैं कि एसीटोन और पॉलीमर के मिश्रण में से एसीटोन कम ताप पर ही उबलने लगे। इस प्रकार तरल एसीटोन गैस अवस्था में बदलता रहता है और उसकी जगह कोशिकाओं में पॉलीमर प्रविष्ट होता रहता है। यहाँ इस बात का भी ध्यान रखा जाता है कि पॉलीमर न्यून श्यानता वाला होना चाहिए अर्थात् वह बहुत ही पतला तरल हो साथ ही उसका रंग समय के साथ बदलना नहीं चाहिए। इसके अलावा यह एसीटोन में घुलनशील और ऊतकों के साथ संगत रखने योग्य होना चाहिए। इस प्रक्रिया को कई बार दोहराने पर एसीटोन पूर्णतः हट जाता है और उसकी जगह पॉलीमर स्थापित हो जाता है।

• प्रदर्श की मुद्रा

निर्वात् में पॉलीमर से संतृप्त करने के बाद मृत शरीर को एक निश्चित मुद्रा प्रदान करना अनिवार्य होता है। उसकी मुद्रा के जरिए विभिन्न आंतरिक अंगों, उनकी स्थिति व कार्य प्रणाली को अच्छी तरह से दर्शाया जा सकता है। मुद्रा प्रदान करने के लिए तार, कीलें, चिमटियां, स्तम्भों और फोम को उपयोग में लाया जाता है। बाद में इन्हें हटा लिया जाता है।

मुद्राओं के अन्तर्गत स्केटिंग करते हुए, जिमनास्ट, जेवेलिन श्रोवर, हर्डर, तीरंदाज, शतरंज खेलने एवं अन्य क्रिया-कलापों वाली मुद्रायें प्लास्टीनेटों को प्रदान की जाती हैं। इससे शरीर की जटिलताओं को जैसे-मांसपेशियों, कंडराओं, स्नायुओं, तंत्रिका-तंत्र, आहार नाल, श्वसन-तंत्र, जनन-तंत्र, भ्रूण विकास, कंकाल-तंत्र, रक्त-नलिकाओं आदि के अन्तर्संयोजन और कार्य प्रणाली को बखूबी दर्शाया जाता है।

• स्थायित्व

प्रदर्शों में स्थायित्व लाने के लिए कठोरीकरण आवश्यक होता है। यह प्लास्टीनेशन का अंतिम चरण होता है। इससे मृत शरीर की मुद्रा स्थायी रूप में बन जाती है। उपयोग किए गए पॉलीमर के आधार पर इस कार्य के लिए गैस, पराबैंगनी किरणों या ताप का प्रयोग किया जाता है।

प्रत्येक नमूना अपने आप में खास होता है। प्रत्येक अंग में वसा की मात्रा, जल व रक्त की मात्रा भिन्न-भिन्न होती है। इसलिए प्लास्टीनेशन की प्रक्रिया में भी नमूनों के आधार पर कुछ भिन्नताएं अपनाई जाती हैं। पॉलीमर के चयन में भी कई बातों का ध्यान रखा जाता है। जैसे कि ऊष्मा आधारित कठोरीकरण के लिए इपॉक्साइड रेजिन को प्रयोग में लाया जाता है क्योंकि यह ऊष्मा द्वारा कड़ा करने पर पारदर्शी हो

विशेष लेख

जाता है अतः शरीर के ऊर्ध्वाधर या क्षैतिज कतरों के लिए उपयुक्त होता है। गैस द्वारा कठोरीकरण किए जाने वाले प्रदर्शकों के लिए सिलिकॉन रबर उपयुक्त रहता है क्योंकि यह मुलायम होता है और नमूनों को जीवन्त-सा प्रतीत होने देता है। सिलिकॉन रबर की श्यानता अत्यन्त कम होती है अतः सम्पूर्ण शरीर के प्लास्टीनेशन में इसका उपयोग सर्वथा उपयुक्त रहता है क्योंकि पतला होने के कारण यह आसानी से कोशिकाओं में एसीटोन के स्थान पर पहुँच जाता है।

एक सम्पूर्ण मानव-शरीर के प्लास्टीनेशन में लगभग एक वर्ष का समय लगता है। डॉ हेगेन के अनुसार प्लास्टीनेशन प्रक्रिया के जरिए मृत शरीर की कोशिकाएं और उनकी प्राकृतिक सतह उनके वास्तविक रूप में रहते हैं और प्लास्टीनेशन से पहले के नमूने की तरह ही दिखाई देते हैं। बस उसमें से सड़न और नमी गायब हो चुकी होती है।

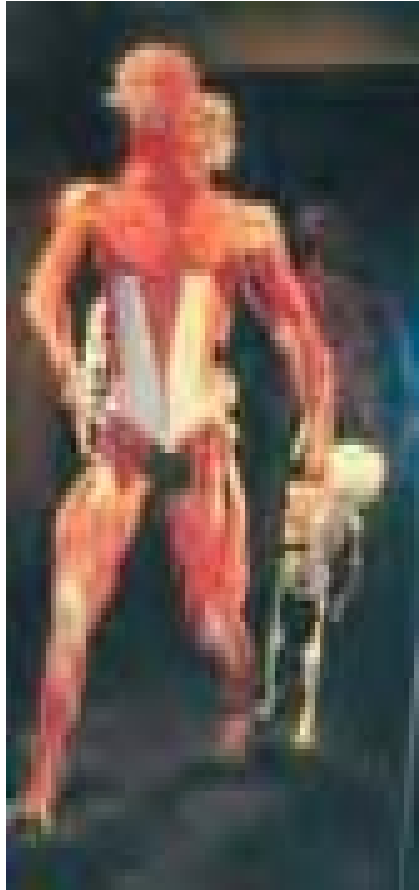
प्लास्टीनेशन के उपयोग

प्लास्टीनेशन कई मामलों में संरक्षण की अन्य विधियों से आगे है। प्लास्टीनेशन द्वारा तैयार किए गए नमूने अपने सामान्य रंग, आकार व अनुपात में ही संरक्षित होते हैं। उनकी आंतरिक संरचनाओं को अत्यन्त शुद्धता, सुन्दरता और स्पष्टता के साथ उजागर किया जा सकता है जो प्लास्टीनेशन की सबसे बड़ी विशेषता है इसके जरिए सुन्दर विच्छेदनों, आंतरिक असामान्यताओं और रोगों के बढ़ने की प्रक्रियाओं को दिखाया जा सकता है। अल्कोहल या फार्मल्लिहाइड विलयन में संरक्षित नमूनों की तरह गीला होने के बजाय प्लास्टीनेशन के नमूने शुष्क, स्पर्श करने योग्य, स्पष्ट व दर्शनीय होते हैं। ड्रावने होने के बजाय ये नमूने एक प्रकार का सौन्दर्य समेटे हुए होते हैं।

प्लास्टीनेशन की प्रक्रिया शारीरिकी के अध्ययन में एक वरदान साबित हुई है। वर्तमान में प्लास्टीनेशन संसार के चालीस से भी ज्यादा मेडिकल और डेन्टल स्कूलों में अध्यापन हेतु उपयोग में लाई जाने वाली प्रक्रिया बन चुकी है।

प्लास्टीनेटों का उपयोग सिर्फ चिकित्सा क्षेत्र में प्रशिक्षण के लिए ही नहीं किया जाता है बल्कि आमजन के लिए भी यह बहुत उपयोगी साबित हो रहा है। आम आदमी इन प्रदर्शकों को देखकर अपने शरीर के विकास व आंतरिक संरचनाओं के बारे में अधिकाधिक जान सकता है। विभिन्न दुर्व्यसनों से शरीर पर दुष्प्रभावों को भी वह अच्छी तरह जान सकता है और अपने शरीर के प्रति जागरूक हो सकता है। डॉ हेगेन ने प्लास्टीनेटों के माध्यम से चिकित्सा विज्ञान को आमजन के बीच की चीज साबित कर दिया है।

प्लास्टीनेशन के जरिए जन्तुओं के अध्ययन को और आसान बनाया जा सकेगा। जन्तुओं के अध्ययन के लिए कम संख्या में जन्तुओं को मारना पड़ेगा क्योंकि जन्तु का एक ही प्लास्टीनेट बार-बार और लंबे समय तक उपयोग में लाया जा सकेगा। ऐसा और किसी भी विधि से इतनी अच्छी तरह से संभव नहीं है।



प्लास्टीनेशन द्वारा तैयार किए गए नमूने अपने सामान्य रंग, आकार व अनुपात में ही संरक्षित होते हैं। उनकी आंतरिक संरचनाओं को अत्यन्त शुद्धता, सुन्दरता और स्पष्टता के साथ उजागर किया जा सकता है। साथ ही, इसके जरिए सुन्दर विच्छेदनों, आंतरिक असामान्यताओं और रोगों के बढ़ने की प्रक्रियाओं को दिखाया जा सकता है। अल्कोहल या फार्मल्लिहाइड विलयन में संरक्षित नमूनों की तरह गीला होने के बजाय प्लास्टीनेशन के नमूने शुष्क, स्पर्श करने योग्य, स्पष्ट व दर्शनीय होते हैं। ड्रावने होने के बजाय ये नमूने एक प्रकार का सौन्दर्य समेटे हुए होते हैं।

इस प्रकार यह जैव-विविधता संरक्षण में भी उपयोगी है।

काया-दान कार्यक्रम

मानव के मृत शरीरों की प्राप्ति के लिए डॉ हेगेन ने काया-दान कार्यक्रम की शुरुआत भी की है जिसके अन्तर्गत नौ हजार से भी ज्यादा लोग नामांकित हैं जिनका शरीर उनके मरणोपरान्त प्लास्टीनेशन हेतु उपयोग में लाया जा सकेगा। नामांकित लोगों में से पाँच सौ से अधिक लोगों की तो मृत्यु भी हो चुकी है।

प्लास्टीनेशन संस्थान

डॉ गुंठेर वॉन हेगेन ने सन् 1993 में प्लास्टीनेशन संस्थान की स्थापना हाइडेल्बर्ग, जर्मनी में की। इसकी स्थापना से पूर्व वे लगभग 15 वर्षों तक प्लास्टीनेशन

की प्रक्रियाओं को सुधारने व उत्कृष्ट बनाने में लगे रहे। उन्होंने पौधों के ऊतकों से शुरुआत करके मानव-अंगों व सम्पूर्ण मानव-शरीर तक इस प्रक्रिया को पहुँचाया। प्लास्टीनेशन संस्थान के उद्देश्य हैं :

- शरीर रचना विश्लेषण को नई ऊँचाइयाँ देना,
- आमजन में अपने शरीर व सेहत के प्रति जागरूकता लाना,
- प्लास्टीनेशन प्रौद्योगिकी को प्रचारित व प्रतिष्ठित करना आदि।

आज प्लास्टीनेशन की तीन अन्तर्राष्ट्रीय प्रयोगशालाओं, जो कि जर्मनी, चीन और किर्गीस्तान में स्थापित हैं, में 340 से ज्यादा विशेषज्ञ कार्यरत हैं। चीन में स्थापित प्रयोगशाला में जन्तुओं के प्लास्टीनेशन पर विशेष ध्यान दिया जाता है। इसके अलावा कई देशों में राष्ट्रीय प्लास्टीनेशन प्रयोगशालाएं स्थापित की गई हैं जिनमें अध्ययन हेतु प्लास्टीनेट तैयार किए जाते हैं। प्लास्टीनेशन तैयार करने के लिए विशेषज्ञों को एक साथ कई क्षेत्रों का ज्ञाता होना पड़ता है। इसके लिए इंजीनियरिंग, रसायन, शल्य-चिकित्सा आदि का ज्ञाता होने के साथ-साथ उत्कृष्ट कल्पनाशीलता और वर्षों का अनुभव अत्यन्त आवश्यक होता है। विशेषज्ञों को प्लास्टीनेट तैयार करने से पूर्व ही उसका अंतिम रूप सोचना पड़ता है और उसी रूप तक प्लास्टीनेट को पहुँचाने के लिए सारी जुगत करनी पड़ती है।

प्रारंभ के बीस वर्षों तक प्लास्टीनेशन के अन्तर्गत छोटे शारीरिक अंगों को चिकित्सकीय प्रशिक्षण हेतु संरक्षित किया गया लेकिन बाद में प्रक्रिया के परिष्करण के पश्चात् मृत मानव-शरीरों का पूर्णतः प्लास्टीनेशन संभव हो गया और तब तैयार किए गये प्लास्टीनेटों को चिकित्सकीय प्रशिक्षण के साथ-साथ आम आदमी के समक्ष भी प्रदर्शन के लिए रखे जाने की योजना बनी।

प्रदर्शन में अवरोध

मृत मानव शरीरों के प्लास्टीनेटों की प्रदर्शनी के कारण कई विवाद भी खड़े हुए हैं जिनमें से ज्यादातर धार्मिक मामले हैं। कुछ लोगों का कहना है कि प्लास्टीनेटों को देख कर आम आदमी अजीब सी मनोदशा में चला जाता है। उसके अन्दर भय और विरक्ति के भाव उत्पन्न हो जाते हैं जब कि अधिकांश लोगों ने स्वीकार किया है कि प्लास्टीनेटों को देख कर उन्हें काफी जानकारियाँ मिली हैं। वे अपने शरीर के प्रति पहले से ज्यादा जागरूक हो गए हैं और स्वस्थ जीवन को बनाए रखने का प्रयास करेंगे। कुल मिलाकर मृत शरीरों के प्रदर्श, जो कि प्लास्टीनेशन प्रक्रिया से बने हैं, एक साफ, स्पशयोग्य, विश्वसनीय, दुर्गन्धमुक्त, विषमुक्त और प्रकृति-मित्र नमूनों के रूप में सामने आए हैं। इन प्रदर्शों के अवलोकन से व्यक्ति ज्ञान के एक अनजाने सागर में अर्चभित होकर गोते लगाता है। प्लास्टीनेटों को देखकर व्यक्ति खुद को अपने ही शरीर के अन्दर ज्ञांकता हुआ महसूस करता है। उसे पहली बार इतने नजदीक से जानने का मौका मिलता है।